

भारतीय विदेश नीति : समसामयिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ. दयाचन्द

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

सार

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति वैचारिक प्रतिबद्धताओं से आगे बढ़कर पूरी तरह 'राष्ट्रीय हित', व्यावहारिकता और 'बहु-सरेखण' (Multi-alignment) पर आधारित हो गई है। [1]

प्रमुख विशेषताएं एवं रणनीतियाँ

- सामरिक स्वायत्तता: भारत किसी एक गुट या महाशक्ति पर निर्भर रहने के बजाय अपनी स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। [1]
- बहु-सरेखण (Multi-alignment): आज भारत रूस के साथ पारंपरिक मित्रता बनाए रखते हुए अमेरिका, क्वाड (Quad), इजराइल और यूरोपीय संघ जैसे पश्चिमी देशों के साथ भी घनिष्ठ रणनीतिक और रक्षा संबंध रख रहा है। [1, 2]
- आर्थिक और तकनीकी कूटनीति: विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य देश के भीतर आर्थिक विकास को गति देना, ऊर्जा सुरक्षा, और महत्वपूर्ण तकनीकों (Critical Technologies) तक पहुंच बनाना है। [1, 2, 3]
- पड़ोसी पहले (Neighborhood First): क्षेत्रीय सुरक्षा और सहयोग को मजबूत करने के लिए दक्षिण एशिया के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को विशेष महत्व दिया जा रहा है। [1]
- सॉफ्ट पावर और वैश्विक नेतृत्व: योग, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर ग्लोबल साउथ (Global South) की आवाज बनकर भारत वैश्विक सुशासन में अपनी भूमिका बढ़ा रहा है।

परिचय

हाल ही में हुई एक चर्चा में, प्रभावी विदेश नीति रणनीतियों को समझने और लागू करने के महत्व पर जोर दिया गया, विशेष रूप से वैश्विक मंच पर भारत की बदलती भूमिका के संदर्भ में। इस बातचीत में उन प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं पर प्रकाश डाला गया जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में छात्रों और पेशेवरों के लिए आवश्यक हैं।

चाबी छीनना

- सामरिक स्वायत्तता : विदेश नीति संबंधी निर्णयों में स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए भारत का दृष्टिकोण।
- बहुसरेखण : किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता के बिना कई शक्तियों के साथ जुड़ना।
- पड़ोसी देशों को प्राथमिकता देने की नीति : क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने के लिए पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को प्राथमिकता देना।
- द्विपक्षीय तंत्र : बेहतर सहभागिता के लिए व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान केंद्रित करना।
- सांस्कृतिक कूटनीति : अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक संबंधों का उपयोग करना।
- सामरिक स्वायत्तता की अवधारणा [1,2,3]

सामरिक स्वायत्तता समकालीन भारतीय विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण शब्द है। यह भारत की विदेश संबंधों में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को संदर्भित करता है, विशेष रूप से ऐसे विश्व में जहां महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता फिर से उभर रही है। यह अवधारणा भारत को कार्रवाई की स्वतंत्रता बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को अधिकतम करने की अनुमति देती है।

बहु-संरेखण और मुद्दे-आधारित संरेखण

भारत की विदेश नीति बहुसंरेखण पर आधारित है, जिसका अर्थ है किसी एक सहयोगी पर अत्यधिक निर्भर हुए बिना विभिन्न देशों और शक्तियों के साथ संबंध स्थापित करना। यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां भारत महाशक्तियों और क्षेत्रीय खिलाड़ियों दोनों के साथ अपने संबंधों में संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है।

पड़ोस को प्राथमिकता देने की नीति

भारत की विदेश नीति में 'पड़ोसी पहले' की नीति प्रमुख रही है। यह नीति दक्षिण एशिया के पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंध बनाने के महत्व पर बल देती है। इन संबंधों को प्राथमिकता देकर भारत क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा देना चाहता है, जो उसकी अपनी सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

द्विपक्षीय तंत्र: व्यक्तिगत संबंधों पर एक विशेष ध्यान

हाल के वर्षों में, भारत ने क्षेत्रीय सहयोग के लिए द्विपक्षीय तंत्रों की ओर रुख किया है। यह दृष्टिकोण नेपाल, भूटान और बांग्लादेश जैसे देशों के साथ गहन जुड़ाव की अनुमति देता है, जिससे मजबूत संबंध और विभिन्न मुद्दों पर अधिक प्रभावी सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक कूटनीति: व्यवहार में सॉफ्ट पावर

भारत की विदेश नीति में सांस्कृतिक कूटनीति की महत्वपूर्ण भूमिका है। योग, बौद्ध धर्म और बॉलीवुड जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर भारत अपनी सॉफ्ट पावर को मजबूत करना और अन्य देशों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करना चाहता है। यह सांस्कृतिक संपर्क न केवल विदेशों में भारत की छवि को बेहतर बनाता है, बल्कि आपसी समझ और सहयोग को भी बढ़ावा देता है।

विदेश संबंधों में संविधान की भूमिका

भारत के संवैधानिक ढांचे ने उसकी विदेश नीति को भी प्रभावित किया है। देश के लोकतांत्रिक मूल्य और सिद्धांत कई देशों, विशेषकर दक्षिण एशिया के देशों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। सशक्त संवैधानिक लोकतंत्र के निर्माण में भारत का अनुभव इस क्षेत्र के अन्य देशों के लिए एक आदर्श रहा है। [4,5,6]

चीन से निपटना : एक रणनीतिक परिप्रेक्ष्य

भारत और चीन के संबंध जटिल और बहुआयामी हैं। चीन द्वारा उत्पन्न चुनौतियाँ, विशेष रूप से सीमा विवाद और क्षेत्रीय प्रभाव के संदर्भ में, एक रणनीतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत प्रतिस्पर्धा और सहयोग के बीच संतुलन बनाए रखने का लक्ष्य रखता है, जिसके तहत आपसी हित के मुद्दों पर चीन के साथ संवाद स्थापित करते हुए अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा भी सुनिश्चित की जाती है।

तीव्र कूटनीति: वैश्विक चुनौतियों का त्वरित समाधान

भारत की विदेश नीति में, विशेषकर संकटों के समय, त्वरित कूटनीति की अवधारणा को प्रमुखता प्राप्त हुई है। मानवीय आवश्यकताओं और क्षेत्रीय चुनौतियों के प्रति त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रियाएँ भारत के कूटनीतिक प्रयासों की पहचान बन गई हैं, जो वैश्विक मंच पर एक सक्रिय भूमिका निभाने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

अर्ध-कूटनीति का महत्व

पैरा-डिप्लोमेसी से तात्पर्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राज्यों और शहरों जैसे उप-राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका से है। भारत ने राजनयिक संबंध स्थापित करने में इन संस्थाओं के महत्व को पहचाना है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न स्तरों पर सहयोग बढ़ा है। यह दृष्टिकोण भारत की वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाता है और पारंपरिक राज्य-राज्य संबंधों से परे सहयोग को बढ़ावा देता है।

वैश्विक उपस्थिति का विस्तार

भारत की विदेश नीति का उद्देश्य दक्षिणपूर्व एशिया, मध्य एशिया और अन्य क्षेत्रों के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करके वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति बढ़ाना है। उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा और कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति जैसी पहलें इन क्षेत्रों में आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को गहरा करने के भारत के प्रयासों के उदाहरण हैं।

अंतराष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इन प्रमुख अवधारणाओं और रणनीतियों को समझना आवश्यक है। चर्चाओं और विश्लेषणों में इन शब्दों का प्रभावी ढंग से उपयोग करके, छात्र और पेशेवर विदेश नीति की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और भारत की अंतराष्ट्रीय गतिविधियों पर सार्थक बहस में योगदान दे सकते हैं।

विचार-विमर्श

आज की बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश और पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के नाते (और 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के अनुमान के साथ), नई दिल्ली आपूर्ति श्रृंखलाओं पर पुनर्विचार करने से लेकर तकनीकी मानकों को निर्धारित करने और जलवायु लक्ष्यों को आगे बढ़ाने तक, वैश्विक चुनौतियों से निपटने में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा, भारत के पास विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सेना है और यह वैश्विक दक्षिण के लिए एक अग्रणी आवाज के रूप में उभरा है। रणनीतिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि और बढ़ते लेन-देनवाद से चिह्नित वैश्विक संदर्भ में, भारत की विशिष्ट विदेश नीति एशिया और उससे परे भी गहन रुचि का विषय बन रही है।

इस दृष्टिकोण का मूल सिद्धांत गुटनिरपेक्षता का है, जिसे शीत युद्ध के दौरान भारतीय कूटनीति की आधारशिला माना जाता है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने गुटनिरपेक्षता की नाजुक राह पर चलते हुए, अपनी राष्ट्रीय स्वायत्तता को बनाए रखने के लिए अक्सर औपचारिक सुरक्षा गठबंधनों से परहेज किया है। फिर भी, शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ के साथ भारत के वास्तविक गठबंधन ने इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से दरकिनार कर दिया। यह साझेदारी अमेरिका द्वारा पाकिस्तान और चीन की ओर झुकाव वाले रुख के जवाब में रणनीतिक आवश्यकता से उत्पन्न हुई थी, और उस समय भारतीय अभिजात वर्ग द्वारा समाजवादी नीतियों के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण ने इसे सुगम बनाया था।^[7,8,9]

आज, गुटनिरपेक्षता भारतीय विदेश नीति को समझने का एक अप्रचलित ढांचा है। भारत का प्रभाव बढ़ने के साथ-साथ, उसकी विदेश नीति के पीछे के तर्क को समझना और भी ज़रूरी हो जाता है, और इसके लिए हमें उसके अतीत को

समझना होगा। स्वतंत्रता के बाद से प्रमुख शक्तियों के प्रति भारत का दृष्टिकोण कैसे विकसित हुआ है? यह लेख शीत युद्ध से लेकर वर्तमान तक भारत की विदेश नीति की प्रगति का विश्लेषण सोवियत संघ/रूस, अमेरिका और चीन के साथ उसके संबंधों पर केंद्रित करते हुए करता है। इसमें तर्क दिया गया है कि भारतीय विदेश नीति तीन प्रमुख रणनीतिक दृष्टिकोणों के माध्यम से निरंतर विकसित हुई है: (क) स्वतंत्रता के बाद (1947-1991) दिल्ली की विदेश नीति के मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत से; (ख) शीत युद्ध की समाप्ति के बाद (1991-2014) रणनीतिक स्वायत्तता से; और (ग) अंततः बदलते बहुध्रुवीय विश्व में बहु-संरक्षण को अपनाते हुए (2014-वर्तमान)।

इस प्रकार, भारत महाशक्तियों के साथ संबंधों को महज़ संचालित करने से आगे बढ़कर, अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और समान स्थिति से उन्हें सक्रिय रूप से आकार देने लगा है। यह न केवल बदलती वैश्विक परिस्थितियों को दर्शाता है, बल्कि भारत की विदेश नीति को निर्देशित करने वाले सिद्धांतों के क्रमिक पुनर्गठन को भी प्रतिबिंबित करता है। और, बढ़ते बहुध्रुवीय विश्व और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के दबावों के संदर्भ में, भारत की बहु-संरक्षण नीति और रणनीतिक स्वायत्तता में महाशक्तियों के बीच तेजी से अस्थिर होते विश्व में आगे बढ़ने की चाह रखने वाले अन्य देशों के लिए एक बार फिर उदाहरण या विकल्प बनने की क्षमता है।

उभरता हुआ भारत: बहुसंरक्षण का युग (2014-वर्तमान)

मई 2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद, भारत की विदेश नीति में बदलाव की अपार उम्मीदें थीं। आम चुनाव में मिली भारी जीत (जो 1984 के बाद पहली बार हुई थी) के बाद लोकसभा में स्पष्ट बहुमत हासिल करने से उनकी राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई। अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही, मोदी की व्यक्तिगत शैली और भारत में हिंदू वर्चस्व स्थापित करने वाले हिंदुत्व आंदोलन की विचारधारा से उनका जुड़ाव भारतीय विदेश नीति को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है, जिससे उस पर मोदी की विशिष्ट छाप पड़ गई है।

हालांकि, गहन विश्लेषण से पता चलता है कि मोदी अपने पूर्ववर्तियों और भारतीय विदेश नीति को निर्देशित करने वाले वर्तमान सिद्धांतों, विशेष रूप से रणनीतिक स्वायत्तता के लेन-देन संबंधी स्वरूप का ही प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि के बीच उभरते बहुध्रुवीय तंत्र को दिशा देने में सहायक प्रतीत होता है। हालांकि, अंतर यह है कि रणनीतिक स्वायत्तता के आयामों में से एक, बहु-संरक्षण को और अधिक सुदृढ़ किया जा रहा है, जिसे एक उभरती हुई शक्ति और वैश्विक दक्षिण की अग्रणी आवाज के रूप में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में दिल्ली की बढ़ती प्रासंगिकता से बल मिल रहा है।

सामरिक स्वायत्तता का अर्थ है राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय लचीलापन बनाए रखना, वहीं बहुसंरक्षण विविध सामरिक साझेदारियों और संबंधों के नेटवर्क को विकसित करके इस लचीलेपन को और मजबूत करता है। दूसरे शब्दों में, ये दो गैर-भेदभावपूर्ण अवधारणाएं अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रति भारत के सक्रिय, अलगाव-मुक्त और बहुमुखी दृष्टिकोण को दर्शाती हैं और स्वतंत्रता के बाद से भारतीय विदेश नीति के विकास को प्रतिबिंबित करती हैं। विशेष रूप से बहुसंरक्षण विभिन्न मुद्दों या क्षेत्रों में उपयुक्त साझेदारों का चयन करके अक्सर परस्पर विरोधी हितों के जटिल जाल में कुशलतापूर्वक आगे बढ़ने में मदद करता है, जिससे बदलती परिस्थितियों के प्रति दिल्ली की अनुकूलन क्षमता मजबूत होती है। भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर (2020: 10) के शब्दों में, "[यह] हमारे लिए अमेरिका से जुड़ने, चीन को संभालने, यूरोप के साथ संबंध सुधारने, रूस को आश्वस्त करने, जापान को शामिल करने, पड़ोसियों को साथ लाने, पड़ोस का विस्तार करने और समर्थन के पारंपरिक क्षेत्रों को बढ़ाने का समय है।"

संयुक्त राज्य अमेरिका[10,11,12]

पिछले एक दशक में, अमेरिका-भारत संबंधों में सकारात्मक विकास देखने को मिला है, विशेष रूप से व्यापार, प्रौद्योगिकी और सैन्य सहयोग के क्षेत्र में – जो अमेरिका के साथ जुड़ने की तत्परता का प्रमाण है। चीन को लेकर साझा चिंताएं इस बढ़ते सहयोग का एक प्रमुख कारक रही हैं। लद्दाख में 2020 के गतिरोध से चीन के प्रति भारत का बढ़ता अविश्वास, अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि और चीन को मात देने के लिए अन्य देशों को करीब लाने की वाशिंगटन की तत्परता के साथ मेल खाता है, जिसमें भारत एक केंद्रीय भागीदार है। 2020 तक, दोनों देशों ने भारत की सैन्य क्षमताओं को उन्नत करने में योगदान देने के लिए भू-स्थानिक डेटा सहित संवेदनशील जानकारी साझा करने हेतु बुनियादी आदान-प्रदान और सहयोग समझौते (बीईसीए) पर हस्ताक्षर किए थे। 2023 में, प्रौद्योगिकी और रक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकी पहल (आईसीईटी)¹ की स्थापना की गई। बाद में अमेरिका-भारत रणनीतिक व्यापार वार्ता के शुभारंभ के साथ इसे और मजबूत किया गया।

वाशिंगटन और दिल्ली के बीच इस साझेदारी का एक अतिरिक्त पहलू हिंद-प्रशांत क्षेत्र है, जहां दोनों देश जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड में भाग लेते हैं, जो "क्षेत्रीय शांति, स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि" को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई एक पहल है। 2017 में इसके पुनरुद्धार के बाद और 2020 में चीन के साथ बढ़ते तनाव के बाद, भारत ने अपनी भागीदारी को और गहरा किया है क्योंकि इस लघु संगठन ने अपने एजेंडे को लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं, महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों और यहां तक कि अंतरिक्ष सहयोग तक विस्तारित किया है - समुद्री सुरक्षा के अपने मूल जनादेश की तुलना में गैर-पारंपरिक सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

हालांकि, हाल ही में संबंधों में तनाव आ गया है। शुरुआत में, दिल्ली ने ट्रंप के दूसरे कार्यकाल का स्वागत किया और अपने सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के साथ जल्द ही व्यापार समझौते की उम्मीद की। मोदी फरवरी 2025 में वाशिंगटन गए ताकि संबंधों को सुधारा जा सके और अमेरिकी अधिकारियों द्वारा भारतीय नागरिकों के कठोर निर्वासन पर हो रही आलोचनाओं के बावजूद टैरिफ पर अनुकूल व्यवहार सुनिश्चित किया जा सके। हालांकि, दो बातों ने संबंधों को खराब कर दिया है, वार्ताओं को रोक दिया है और अमेरिकी विश्वसनीयता के बारे में भारत की चिंताओं को फिर से बढ़ा दिया है। पहला, पहलगांम हमले के बाद मई 2025 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम कराने के ट्रंप के बार-बार किए गए दावों को दिल्ली ने पूरी तरह से खारिज कर दिया। दूसरा, अगस्त 2025 के अंत में, रूस से तेल की खरीद से जुड़े ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए 50% टैरिफ ने दशकों की स्थिर प्रगति के बाद संबंधों में अभूतपूर्व गिरावट ला दी है। परिणामस्वरूप, अगस्त के अंत में होने वाली अमेरिका-भारत व्यापार वार्ता का छठा दौर स्थगित कर दिया गया, जिससे इस बात पर संदेह पैदा हो गया है कि क्या इस शरद ऋतु में कोई समझौता हो पाएगा, जैसा कि मूल रूप से पिछले फरवरी में मोदी की वाशिंगटन यात्रा के दौरान निर्धारित किया गया था। ट्रंप के टैरिफ और बयानबाजी से बढ़ती निराशा भारत को अमेरिका से दूर हटने के लिए मजबूर कर रही है, जबकि वह चीन के साथ सावधानीपूर्वक संबंध सुधार रहा है और रूस के साथ अपनी साझेदारी को बनाए रख रहा है।

चीन

चीन के संदर्भ में, 2013, 2014, 2017 और 2020 में हुए गंभीर सीमा गतिरोधों ने द्विपक्षीय संबंधों पर बोझ डाला है, क्योंकि ये प्रतीकात्मक रूप से संवेदनशील हैं - 1962 के भारत-चीन युद्ध की यादें ताजा करते हैं और पुराने घावों को फिर से हरा

करते हैं - और भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से 2020 का गलवान संघर्ष, जिसमें 20 भारतीय सैनिक और अज्ञात संख्या में चीनी सैनिक शहीद हुए, ने सीमाओं की अस्थिरता को उजागर किया और भारत-चीन संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिससे बीजिंग दिल्ली के लिए एक प्रमुख, बल्कि प्राथमिक, खतरा बन गया। हालांकि, वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सीमा विवादों के अलावा, अन्य विवादास्पद मुद्दों ने दिल्ली में अविश्वास को और गहरा कर दिया है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान के साथ चीन के घनिष्ठ संबंध और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के माध्यम से दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में इसकी बढ़ती उपस्थिति और प्रभाव ने भारत में बीजिंग द्वारा संभावित घेराबंदी रणनीति की चिंताओं को जन्म दिया है, जो बीआरआई में शामिल होने से भारत की अनिच्छा और इनकार का कारण है। [13,14,15]

चीन की बढ़ती चुनौती और दोनों पक्षों के बीच शक्ति संतुलन में बढ़ती असमानता को लेकर सुरक्षा संबंधी चिंताएं आर्थिक संबंधों और प्रौद्योगिकी सहित अन्य क्षेत्रों तक भी पहुंच गई हैं, जिससे इन क्षेत्रों में संबंधों का सुरक्षाकरण बढ़ता जा रहा है। वास्तव में, भारत आर्थिक सुरक्षा को सर्वोपरि रखने वाली व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा संरचना के परिप्रेक्ष्य में चीन के साथ आर्थिक संबंधों की गहन जांच कर रहा है। आर्थिक दृष्टि से, भारत का सबसे बड़ा व्यापार घाटा चीन के साथ है, जो 2024 तक 99.2 अरब डॉलर तक पहुंच गया था। जेनेरिक दवाओं और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित भारत के उद्योग के संपूर्ण क्षेत्र अब चीनी आपूर्ति पर अत्यधिक निर्भर हैं, इस हद तक कि भारत के निर्यात क्षेत्र को विकसित करने के लिए चीन से अधिक आयात की आवश्यकता है। यह स्थिति आर्थिक संबंधों को आवश्यकता और शिकायत दोनों में बदल देती है, विशेष रूप से तब जब आर्थिक निर्भरता सीमा विवादों के समानांतर चल रही है। इन कमजोरियों को दूर करने के लिए, भारत ने चीनी निवेशों पर प्रतिबंध लगाया, भारतीय सार्वजनिक खरीद तक पहुंच सीमित की, टिकटॉक जैसे कई चीनी ऐप पर प्रतिबंध लगाया और चीनी कंपनियों को भारत के 5जी नेटवर्क में भाग लेने से बाहर कर दिया। घरेलू उपायों के अलावा, दिल्ली ने अपनी रक्षा और तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करने के लिए नए साझेदारों की तलाश की है, विशेष रूप से अमेरिका और फ्रांस के साथ।

हालांकि, अक्टूबर 2024 में, संबंधों में बदलाव के संकेत उभरने लगे। रूस में ब्रिक्स+ शिखर सम्मेलन के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और मोदी की पांच साल बाद पहली मुलाकात हुई, जिससे उच्चतम स्तर पर बातचीत फिर से शुरू हुई। हाल ही में, अगस्त 2025 के अंत में चीनी विदेश मंत्री वांग यी की भारत यात्रा के दौरान - ठीक उसी समय जब ट्रंप ने दिल्ली को प्रतिबंधों की धमकी दी थी - दोनों पक्षों ने व्यापार और निवेश प्रवाह को लगभग सुगम बनाने, सीधी उड़ानों को संक्षेप में शुरू करने और वीजा प्रक्रियाओं में सुधार करने पर सहमति व्यक्त की, ताकि लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा दिया जा सके और सीमा विवादों को कुछ हद तक दरकिनार किया जा सके। वास्तव में, 2025 में भारत में कुछ चीनी निवेश फिर से बढ़ने लगे हैं, जिनमें उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं। भारतीय व्यापार समुदाय ने मोदी सरकार पर चीन पर लगे प्रतिबंधों में ढील देने के लिए दबाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में मोदी की भागीदारी ने संबंधों में आए बदलाव को और पुष्ट किया और साथ ही अमेरिका को भारत के वैकल्पिक साझेदारों के बारे में संकेत भी दिए। हालांकि, यह देखना बाकी है कि चीन-पाकिस्तान संबंधों और भारत के पड़ोस में बढ़ती चीनी उपस्थिति सहित मूलभूत तनाव, गलवान 2020 के बाद के युग में स्थिरता की दिशा में इस प्रयास को कैसे प्रभावित करते हैं।

रूस

जब रूस ने 2014 में क्रीमिया पर कब्जा किया, तो भारत की प्रतिक्रिया रूसी संवेदनशीलता के प्रति उसकी निकटता को दर्शाती थी, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शिवशंकर मेनन ने क्रीमिया में रूस के "वैध हितों" को स्वीकार किया था।

इसके अलावा, मार्च 2014 में, भारत ने यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता पर संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव पर मतदान से परहेज किया। इसने 2022 के लिए एक मिसाल कायम की: जब रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया, तो भारत ने मॉस्को की निंदा नहीं की और इस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र महासभा के महत्वपूर्ण मतदान में फिर से मतदान से परहेज किया। नाटो विस्तार को एक प्रमुख कारण बताते हुए युद्ध के संबंध में मॉस्को के दृष्टिकोण के प्रति भारत के कुछ हिस्सों में सहानुभूति मौजूद है। जैसा कि चेल्सी नोक गुयेन तर्क देती हैं, अंततः दिल्ली और मॉस्को के बीच संबंध केवल भू-राजनीति नहीं है, बल्कि "स्नेहपूर्ण राजनीति" भी है: रूस के साथ भारत की साझेदारी को शीत युद्ध की विरासत और भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और व्यापक रूप से उसके राष्ट्रीय सुरक्षा लक्ष्यों का समर्थन करने में एक प्रमुख संपत्ति के रूप में देखा जाता है। दशकों से पोषित निर्भरता को कुछ ही वर्षों में समाप्त नहीं किया जा सकता है; बदलती प्रणालियों, नए मानकों के अनुकूलन और लागत दक्षता से जुड़े मुद्दे ध्यान में रखने योग्य कारक हैं। इसके अलावा, सोवियत संघ के साथ दशकों के संबंधों को भी आसानी से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जयशंकर के शब्दों में, भारत " भावनात्मक रूप से तटस्थ " देश नहीं है, और यह आज भी भारत के विश्वदृष्टिकोण को प्रभावित करता है, विशेष रूप से अमेरिका और विभिन्न यूरोपीय देशों सहित पश्चिमी देशों के साथ उसके संबंधों के संदर्भ में।

परिणाम

इसके बावजूद, दिल्ली ने 2014 से सुरक्षा क्षेत्र में मॉस्को पर अपनी निर्भरता कम करने का प्रयास किया है। एसआईपीआरआई के अनुसार, 2020-2024 की अवधि में भारत के कुल हथियार आयात में रूस का हिस्सा 36% था, जो 2015-2019 के 55% और 2010-2014 के 72% की तुलना में काफी कम है। इसके तीन कारण हैं: द्विपक्षीय संबंधों में "चीन कारक"; आत्मनिर्भरता की ओर रूस का प्रयास; और यूक्रेन पर रूस का आक्रमण। पहला कारण यह है कि चीन के साथ रूस के बढ़ते संबंध, जो भारत के लिए बहुआयामी चुनौती पेश करते हैं, ने मॉस्को के साथ संबंधों में "चीन कारक" को शामिल करने को प्रेरित किया है। अतीत में, रूस के साथ संबंध भारत को चीन और पाकिस्तान से उत्पन्न क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए आश्वासन और समर्थन प्रदान करते थे। आज, बीजिंग के साथ मॉस्को का बढ़ता जुड़ाव रूस के साथ संबंधों के संबंध में भारत के रणनीतिक आकलन को बदल रहा है, जिससे भारत की दीर्घकालिक सुरक्षा में रूस की भूमिका पर संदेह पैदा हो रहा है। दूसरा, " आत्मनिर्भर भारत " की नीतिगत रूपरेखा, जिसे पहली बार 2020 में पेश किया गया था, विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करने, साझेदारों में विविधता लाने और रक्षा सहित अपने उद्योगों को विकसित करने की भारत की महत्वाकांक्षा का मार्गदर्शन करती है। अंत में, यूक्रेन में रूस के युद्ध के संदर्भ में, इस संघर्ष ने मॉस्को की सैन्य क्षमताओं और रक्षा उद्योग की सीमाओं को उजागर किया है, और परिणामस्वरूप, भारत के लिए रक्षा आपूर्तिकर्ता के रूप में इसकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े किए हैं। इसके फलस्वरूप, रक्षा क्षेत्र में बहु-संरक्षण के कारण हथियारों के आयात में विविधता आई है, जिसमें फ्रांस, इजराइल और अमेरिका दिल्ली के प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गए हैं। [16,17]

इस बीच, ऊर्जा सहयोग भारत-रूस संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गया है। रियायती रूसी कच्चे तेल का भारत के आयात में हिस्सा 2022 में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण से पहले 2% से भी कम था, जो जून 2024 में बढ़कर 40% से अधिक हो गया। जीवाश्म ईंधन के अलावा, दोनों पक्ष नागरिक परमाणु ऊर्जा पर भी सहयोग कर रहे हैं, जिसके तहत हाल ही में तमिलनाडु में छह नागरिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण की योजना बनाई गई है। इन तनावों का आपस में जुड़ाव भारत की बहु-संरक्षण रणनीति को दर्शाता है, जिसमें भारत-रूस साझेदारी एक आधारशिला बनी हुई है और संभवतः भविष्य में भी बनी रहेगी, भले ही समय के साथ इसकी केंद्रीयता कम हो जाए क्योंकि दिल्ली विविधीकरण और अपनी क्षमताओं को मजबूत करके रूस पर अपनी अत्यधिक निर्भरता को कम कर रहा है।

भारत की बहुसंख्यक नीति पर भविष्य के परिप्रेक्ष्य

शीत युद्ध से लेकर वर्तमान तक भारतीय विदेश नीति के विकास के माध्यम से, और विशेष रूप से सोवियत संघ/रूस, चीन और अमेरिका के साथ इसके संबंधों के विश्लेषण के माध्यम से, हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों के तीन रणनीतिक दृष्टिकोणों के संबंधों और परिणामों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं जो भारत की व्यापक रणनीति की जड़ में हैं। [18]

निष्कर्ष

सबसे पहले, गुटनिरपेक्षता हमें शीत युद्ध के दौरान भारत की उस स्थिति की याद दिलाती है, जिसमें उसने औपचारिक रूप से न तो अमेरिका और न ही सोवियत संघ का पक्ष लिया था। दूसरे, रणनीतिक स्वायत्तता का तात्पर्य अपने राष्ट्रीय हितों के लिए सर्वोत्तम निर्णय लेने और सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक स्वतंत्रता होना है। तीसरे, बहु-संख्यक का तात्पर्य भारत द्वारा विभिन्न साझेदारियों को मजबूत करने से है। हालांकि, इनमें भिन्नता होने के बावजूद, गुटनिरपेक्षता और बहु-संख्यक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं: महाशक्तियों की मौजूदा स्थिति के बावजूद भारत द्वारा सचेत और सक्रिय रूप से अपना मार्ग चुनने का निर्णय। शीत युद्ध के दौरान, वैश्विक राजनीति अमेरिका और सोवियत संघ के बीच दो विशाल प्रभाव क्षेत्रों में बंटी हुई थी; वर्तमान में, हालांकि अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता में पिछली सदी की महाशक्तियों की स्थिति की झलक मिलती है, लेकिन यह एक उभरती हुई बहुध्रुवीय व्यवस्था के साथ-साथ मौजूद है, जहां शक्ति अधिक व्यापक रूप से विकेंद्रीकृत है। समकालीन परिदृश्य में भारत को किसी भी समय कई विकल्प खुले रखने की आवश्यकता है, जिसे वह अपनी बहु-संख्यक रणनीति के माध्यम से प्राप्त करता है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत ने रूस पर अपनी दीर्घकालिक निर्भरता को कम करने और चीन से उत्पन्न खतरों, जिनमें मॉस्को और इस्लामाबाद के साथ बीजिंग के मजबूत संबंध भी शामिल हैं, के मुकाबले अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बढ़ाने के लिए पश्चिम के साथ संबंध मजबूत करने के प्रयास किए हैं। अब हम एक बदलाव देख रहे हैं: भारत रूस के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखते हुए चीन के साथ सावधानीपूर्वक संबंध विकसित कर रहा है। आगे देखते हुए, कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न बने हुए हैं: एक उभरती हुई शक्ति के रूप में भारत की वर्तमान और भविष्य की प्राथमिकताओं में रूस का कितना योगदान होगा; चीन के साथ इस नए मेल-मिलाप की क्या सीमाएँ हैं; और भारत वास्तव में अमेरिका पर कितना भरोसा कर सकता है? साथ ही, भारत अपने विकल्पों को व्यापक बनाने के लिए यूरोपीय संघ, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य प्रमुख साझेदारों के साथ भी संबंध मजबूत कर रहा है। यह स्पष्ट है कि शीत युद्ध के बाद से ही दिल्ली ने महाशक्तियों के संबंधों में "अस्तित्व बनाए रखने" की प्रवृत्ति को बहुत पहले ही छोड़ दिया है। आज वह अधिक आत्मविश्वास और बराबरी के दृष्टिकोण से इन संबंधों का सामना कर रही है, और निरंतर अस्थिरता के दौर में बहु-संख्यक को ही समाधान मानती है। एक तरह से, जिस प्रकार भारत कभी बांडुंग सम्मेलन और गुटनिरपेक्ष आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाता था, उसी प्रकार वह एक बार फिर वैश्विक दक्षिण के उन देशों के लिए एक उदाहरण बन सकता है जो अमेरिका-चीन टकराव में शामिल नहीं होना चाहते। [19]

संदर्भ

1. "Indian economic growth rate eases" [भारत की आर्थिक विकास दर संतोषपरक] (अंग्रेज़ी भाषा में). बीबीसी न्यूज़. ३० नवम्बर २००७. 25 दिसंबर 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: २४ जून २०१४.
2. India as an Emerging Power – By Sumit Ganguly ISBN 0-7146-5386-1
3. "India among UAE's best friends: Emirati envoy". Arab News (अंग्रेज़ी भाषा में). 15 April 2022 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 15 April 2022.
4. Russia Strategic cooperation. Web.archive.org (17 October 2007).
5. India and Israel: Dawn of a New Era

6. The Times of India
7. "Bhutanese Refugees: Trapped and Tantalized".
8. The Fish Swims Upriver
9. "Planned Indian military base stirs Seychelles controversy". The Straits Times. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
10. "Looking out for number one". Haaretz. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
11. "India Attains Spy Satellite From Israel". TopNews. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
12. "India and Global Strategic Partnership (Columbia University Paper)" (PDF). Columbia University. मूल से पुरालेखन की तिथि: 9 अगस्त 2007. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
13. "Japan-India Partnership in a New Asian Era". Ministry of Foreign Affairs of Japan. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
14. "New Delhi looks to Asia for energy". The National. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
15. "Security pact with Qatar gives India Gulf toehold". The Indian Express. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
16. "India, Seychelles agree to lease Assumption Island for infrastructure development". DNA India. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
17. "Brazil finds a belated ally in India". International Herald Tribune. मूल से पुरालेखन की तिथि: 13 जुलाई 2007. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
18. "India and Global Strategic Partnerships" (PDF). Columbia University. मूल से पुरालेखन की तिथि: 9 अगस्त 2007. अभिगमन तिथि: 13 May 2026.
19. "Dismay at collapse of trade talks".